प्रस्तुतिः प्रभात

लम्बी पूँछ वाला चूहा

एक चूहा था। उसकी पूँछ दूसरे चूहों से कुछ ज़्यादा ही लम्बी थी। वह अपनी लम्बी पूँछ को लेकर बड़ा खुश रहता। खुशी-खुशी उसे निहारता रहता। मन होता जब अकेला ही खेलता और मस्त रहता था। एक दिन वह अकेले खेलते-खेलते ऊब गया। वह दूसरे चूहों के पास गया। वे उस वक्त किसी निहायत ही मज़ेदार खेल में मशगूल थे। उसने बड़े उत्साह से उन चूहों से कहा, "मैं आज से तुम्हारे साथ खेलूँगा। खूब मज़े आएँगे।"

चूहे खेल छोड़कर उसके पास आए। एक गबरू चूहा बोला, "लेकिन हम तो तुम्हें खिलाने वाले ही नहीं हैं।" यह सुनकर लम्बी पूँछ वाले चूहे के मुँह का पानी उतर गया। जैसे-तैसे हिम्मत जुटाकर बोला, "मगर क्यों?" उसके इतना कहते ही पतलू चूहा बोला, "क्योंकि तुम्हारी पूँछ लम्बी है।" सारे चूहे एक साथ बार-बार दोहराने लगे, "क्योंकि तुम्हारी पूँछ लम्बी है।"

लम्बी पूँछ वाले चूहे ने कहा, "मगर मैं इसका क्या कर सकता हूँ?"

"तुम इसे कटा सकते हो", रौबू चूहा बोला। सभी चूहे एक साथ बोले, "अभी इसी वक्त बढ़ई के पास जाकर।" चूहा बिना एक पल भी वहाँ गँवाए बढ़ई के पास गया और बोला, "जल्दी से मेरी पूँछ काट दो।" वह इतनी जल्दबाज़ी में था कि बढ़ई चाचा से सलाम करना भी भूल गया था।

बढ़ई बोला, "मैं दिन-दिन भर लकड़ी ही काटता-पीटता रहता हूँ। पूँछ-मूँछ जैसी चीज़ें काटने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है।" चूहा फिर दोस्तों के पास गया और बोला, "बढ़ई ने कहा है कि उसकी पूँछ-मूँछ जैसी चीज़ें काटने में कोई दिलचस्पी नहीं है।" चूहे उसके लिए जवाब सोचकर तैयार बैठे थे। बोले, "तो जाओ न लुहार के पास।" चूहा लाचार था, क्या करता। गया बेचारा लुहार के पास। और बोला,

"हँसिया की धार के धनी
हथौड़े के वार के धनी
दोस्त खिलाते नहीं हैं
कहते हैं रे तेरी पूँछ
सबसे लम्बी क्यों बनी
तो दादा तू इसे काट दे।"

लुहार बोला,
"तलवार को गलाकर बना दूँ छलनी
हथौड़े की चोट से बना दूँ चिमटी
तेरी पूँछ से क्या बनेगा रे
रहने दे तनी।"

चूहा लुहार की दलील से मात खाकर दौड़ा-दौड़ा गया दोस्तों के पास। लुहार की बात बताकर बोला, "बताओ, इसका क्या जवाब है तुम्हारे पास। अब तो खिला लो।"

चूहे जैसे जवाब सोचकर तैयार ही बैठे थे। बोले, "तो जाओ सुनार के पास। वह बड़ी बारीकी और सफाई से तुम्हारी पूँछ काट देगा।" चूहे का मुँह सूख गया। वह थकी चाल चलता हुआ सुनार को पूँछ दिखाकर बोला, "यह बेकार है इसे काट दो।" सुनार बोला, "अगर इतनी ही बेकार है तो बिल्लियों में बाँट दो।" बिल्ली का नाम सुनते ही चूहा अपनी लम्बी पूँछ को घसीटता हुआ भागा।

निराश चूहा अपने बिल के दरवाज़े पर जाकर खड़ा हुआ और ज़ोर से चिल्लाया, "कोई मेरी पूँछ काटता नहीं। चूहे मुझे खिलाते नहीं। मैं क्या करूँ?" तभी एक मोची उधर से गुज़रता है। वह कहता है, "चीख क्यों रहे हो? लाओ, मैं काट देता हूँ।" मोची थैले में से रांपी निकालकर चट उसकी पूँछ काट देता है। चूहा दर्द और खुशी से कूदता हुआ दोस्तों के पास पहुँचता है। उसके दोस्त इस बार कहते हैं कि तेरी पूँछ तो कुछ ज़्यादा ही छोटी हो गई है। हम ज़्यादा छोटी पूँछ के चूहे को कैसे खेल में शामिल कर सकते हैं?

चित्रः प्रिया कुरियन

अच्छी खबर!

मुल्ला नसरुद्दीन चायखाने में बैठा था। एक आदमी ने उससे पूछा, "मुल्ला, इधर कोने में बैठा एक आदमी सुबक-सुबक कर रो रहा है। तुम्हें कुछ मालूम है उसके साथ क्या हुआ?"

"हाँ, मैंने ही उसे बताया था कि अपने ऊँटों की खातिर सर्दियों के लिए बचाकर रखा हुआ चारा जल चुका है।" मुल्ला ने ठण्डे लहज़े में बताया।

"च्च च्च।" आदमी के मुँह से निकला, "बुरी खबर सुनाना भी एक बड़ा बुरा काम है।"

"उसे एक अच्छी खबर भी सुनानी है।" मुल्ला ने उसी ठण्डे लहज़े से कहा।

"मुझे बताओ, वह अच्छी खबर क्या है?" आदमी ने उत्सुकता से पूछा।

"यह कि उसके सारे के सारे ऊँट भी प्लेग से मारे जा चुके हैं। इसलिए सर्दियों में उसे चारे की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।"

कोई फर्क नहीं

रियोकॉन एक विख्यात ज़ेन-गुरू थे। एक मछुआरे ने उन्हें एक दिन तूफान के बाद समुद्र-तट पर टहलते देखा। तूफान हज़ारों मछलियों को किनारों पर पटक गया था। वे पड़ी-पड़ी छटपटा रही थीं। उनको थोड़ी देर में मर जाना था। रियोकॉन मछलियों को उठा-उठाकर समुद्र में फेंकने लगे।

मछुआरे ने रियोकॉन से कहा, "आप इन सारी मछलियों को तो समुद्र में फेंक नहीं पाएँगे। इन्हें तो हज़ारों की गिनती में मरना है। मैंने ऐसा होते पहले कई बार देखा है। आपकी इस कोशिश से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"इस एक को तो पड़ेगा।" रियोकॉन ने एक और मछली उठाकर समुद्र में फेंकते हुए कहा।